National Seminar & 6th Annual Conference

(Hybrid Mode)

of

Psychological Forum Chhattisgarh

On

Mental Health and wellbeing: Understanding the imperatives of Contempopary Times

Dated 24-25 June,2024

Organized by

Department of Psychology

Pandit Sundarlal Sharma (Open) University Chhattisgarh, Bilaspur, INDIA

//प्रतिवेदन//

मनोविज्ञान विभाग, पं सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय एवं साइकोलॉजिकल फोरम छत्तीसगढ़ के द्वारा "मानसिक स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य बोध" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 24- 25 जून 2024 को किया गया। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. एल. पी. पटेरिया माननीय कुलपति, शहीद नंद कुमार पटेल विश्वविद्यालय, रायगढ़, बीज वक्ता के रूप में प्रो. आर. सी. त्रिपाठी, पूर्व विभागाध्यक्ष, अलाहाबाद वि. वि.,प्रयागराज, प्रो. प्रियंवदा श्रीवास्तव, प्राध्यापक, पं. रविवि रायपुर, शामिल हुए व अध्यक्षता श्री भुवन सिंह राज, कुलसचिव पीएसएसओयू,ने किया । कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं अतिथियों के विधिवत स्वागत के साथ किया गया । इसके पश्चात वक्ताओं ने अपने उद्बोधन प्रस्तुत किए । अपने बीज वक्तव्य में प्रो. आरसी त्रिपाठी सर ने संगोष्ठी के विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मानसिक स्वास्थ्य मूल्य से बनता है मुद्रा से नहीं, जिसमें कई वैश्विक मुद्दे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति कलेक्टिविस्ट है, न कि इंडिविजुअलस्टिक। यही कारण है कि पाश्चात्य देशों की अपेक्षा हमारे देश में मानसिक अस्वस्थता का ग्राफ तुलनात्मक रूप से कम है । हालांकि इस ग्राफ को और अधिक सुधारने के लिए हमें एंपैथी का उपयोग अधिक से अधिक करने की आवश्यकता है । सुनने की क्षमता भी बढ़ाने की आवश्यकता है क्योंकि वर्तमान समय में युवा पीढ़ी बहुत तेजी से काम तो कर रही है परंतु समस्या समाधान करने वाले मस्तिष्क नहीं बन रहे हैं । इस समस्या को ध्यान में रखकर ही नई शिक्षा नीति 2020 का पूरा ड्राफ्ट तैयार किया गया है।

प्रो. पटेरिया ने कहा कि मानसिक स्वास्थ्य एक ऐसा महत्वपूर्ण मुद्दा है जिसके लिए आज चारों तरफ से चर्चाएं हो रही है, कोविड जैसी महामारी के बाद इस पर जन सामान्य का ध्यान अधिक गया है । प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए एप्रिशिएटिव इंटेलीजेंस बहुत महत्वपूर्ण है। डॉ बसंत कुमार सोनबेर ने साइकोलॉजिकल फोरम छत्तीसगढ़ की ओर से अध्यक्षीय उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए सभी अतिथियों का स्वागत किया । संगोष्ठी के समन्वयक एवं विभागाध्यक्ष मनोविज्ञान, डॉ. एस. रूपेंद्र राव ने संगोष्ठी के बारे में विस्तृत परिचय प्रस्तुत करते हुए दो दिवसीय संगोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तुत की। दोनों दिन का मंच संचालन डॉ रोली तिवारी, कोषाध्यक्ष एवं संगोष्ठी की आयोजन सचिव द्वारा किया गया। मनोविज्ञान विभाग, पं सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय साईकोलॉजिकल फोरम छत्तीसगढ़ के द्वारा "मानसिक स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य बोध" विषय पर दो

दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. बंश गोपाल सिंह, माननीय कुलपति पंडित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय शामिल हुए व अध्यक्षता कुलसचिव श्री भुवन सिंह राज ने किया ।

संगोष्ठी के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में कुल 12 शोध पत्र की प्रस्तुति प्रतिभागियों द्वारा दी गई। सत्र अध्यक्षता प्रो. रश्मि सिंह, काशी विद्यापीठ बनारस एवं सह अध्यक्षता डॉ. देवजानी मुखर्जी, प्राध्यापक मनोविज्ञान सेण्ट थामस महाविद्यालय भिलाई द्वारा की गई। द्वितीय सत्र में विषय विशेषज्ञ वक्ता के रूप में प्रोफेसर दिनेश नागर, डायरेक्टर श्री वैष्णव इंस्टिट्यूट ऑफ़ सोशल साइंसेज ह्यूमैनिटीज एंड आर्ट्स इंदौर का उद्बोधन हुआ। इसके साथ ही प्रोफेसर राजेंद्र सिंह राजपूत प्राचार्य डिपार्टमेंट ऑफ़ कम्युनिटी मेडिसिन एंड साइकोलॉजी शासकीय एचडीसीएच मेडिकल कॉलेज आजमगढ़, उत्तर प्रदेश एवं प्रोफेसर विवेक महेश्वरी कुलपति लकुलेश योग विश्वविद्यालय, गांधीनगर गुजरात ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रो. मीता झा, प्राध्यापक मनोविज्ञान अध्ययन शाला पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय को छत्तीसगढ़ शोध सम्मान व के. सूर्यप्रकाश रेड्डी काउंसलर रायपुर एवं डॉ. निशा गोस्वामी को छत्तीसगढ़ समाधान सम्मान से विभूषित किया गया। इस अवसर पर कुल सचिव श्री भुवन सिंह राज ने अपने वक्तव्य में कहा कि फोरम शोध के साथ-साथ समाधान के लिए भी कार्य कर रहा हैं। यह फोरम की उपलब्धि है। मरीज व छात्र की मनोविज्ञान को समझना राष्ट्र व समाज के लिए आवश्यक है। माननीय कुलपति श्री बंश गोपाल सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि सामाजिक समस्याओं का निदान अपनी संस्कृति के अनुरूप करना होगा। वर्तमान परिदृश्य पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मनोविज्ञान की महत्ता काफी बढ़ गई है। सफल जीवन के लिए मनोविज्ञान का ज्ञान होना आज के दौर की आवश्यकता है। देश के अन्य राज्यों के साथ-साथ छत्तीसगढ़ में भी अब यह विषय तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। इस अवसर पर डॉ. पुष्कर दुबे सहायक प्राध्यापक प्रबंधन विभाग को उनके शोध - पत्र "द सिनर्जी का श्रीमद् भागवत गीता कर्म और मेंटल पीस एनहांसिंग लीडरशिप इफेक्टिवेनेस इन हायर एजुकेशन" पर बेस्ट पेपर प्रेजेंटेशन का पुरूस्कार दिया गया। इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में कुल 90 प्रतियोगियों ने सहभागिता की तथा कुल 04 तकनीकी सत्रों में अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये जो पूरे भारत वर्ष के विभिन्न राज्यों जिनमें उ. प्र., म. प्र. उत्तराखंड, बिहार, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, झारखंड, हरियाणा एवं दिल्ली मुख्य रूप से है। उक्त संगोष्ठी में लगभग 150 प्रतिभागी एवं प्राध्यापक गण सम्मिलित हुए। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ साइकोलॉजिकल फोरम के अध्यक्ष डॉ. बसंत सोनवेर, उपाध्यक्ष एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी के सहसंयोजक डॉ. मनोज कुमार राव, सचिव एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक डॉ. एस. रूपेंद्र राव, सह सचिव डॉ. गुरप्रीत छाबड़ा, कोषाध्यक्ष एवं आयोजन सचिव डॉ. रोली तिवारी, सहसंयोजक डॉ ललिता साहू, डॉ. मंजरी शर्मा एवं फोरम के सदस्य डॉ. अंकित देशमुख, डॉ. मनोज खन्ना समेत विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एवं शिक्षार्थी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

S. R. Rao

कार्यक्रम सयोजक
अध्यक्ष
मनोविज्ञान विभाग
पं. सुंदरलाल शर्मा (मुक्त) वि.वि.
बिलासपुर (छ.ग.)